फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर **188** फरवरी **2004**

कहत कबीर

मण्डी के समुद्र में
कागज की नाव हैं
कम्पनियाँ।

पीढियों के बीच सम्बन्ध

★**ग्यारह वर्षीय :** घर- परिवार जेल ही तो है। माता- पिता की तीखी- खोजी नजरें हर समय बच्चों का पीछा करती रहती हैं। माता- पिता के हिसाब से कोई चूक हो जाती है तो बच्चों को सजा मिलती है।

★**पच्चीस वर्षीय :** परिवार अपने सदस्यों के शोषण पर आधारित है। सदस्यों के भावनात्मक दोहन- ब्लैकमेलिंग और कठोरता- क्रूरता की जुगलबन्दी से ही आज परिवार जीवित है। समाज में जारी वृहद्तर शोषण से परिवार के संचालक स्वयं अत्याधिक पीड़ित हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि बड़ी जिम्मेदारी से परिवार के बड़े, माता- पिता शोषण के साँचे अनुसार बच्चों को ढालने में दिन- रात एक करते हैं। किसान का हो चाहे मजदूर का, आज परिवार लँगड़ा है और अधिकतर परिवारों को बनाये रखना परिवार के बड़े- छोटे हर सदस्य के लिये काम- काम- काम लिये है, निन्यानवे के चक्कर लिये है। फिर भी, युवा होने पर सन्तानों पर माता- पिता विवाह के लिये सीमाहीन दबाव डालते हैं। किस लिये? क्या इसलिये कि नये परिवारों के रूप में शोषण की नई इकाइयों का गठन हो सके?

★**अधेड़ आयु :** परिवारों में अशान्ति ही अशान्ति फैल रही है। न साथ बैठते हैं, न आपस में प्रेम है। उखड़े- उखड़े, खिंचे- खिंचे रहते हैं। ज्यादा बोझ- जिम्मेदारी- खर्च के दबाव, पूछ का- कद्र का नहीं होना .... ज्यादातर लोग अन्दर से अकेलापन महसूस कर रहे हैं हालाँकि दिखाने को तो परिवार में स्वयं को घुलेमिले दिखाते हैं। बड़े- छोटे सब के लिये परिवार बहुत ही कष्टपूर्ण हो गया है। सिकुड़ता आया परिवार अब बिखर रहा है, टूट रहा है। परिवार कहता है कि तुम्हारा बोझ नहीं ओट सकता। दो रोटी के लिये घर छोड़- छोड़ कर लाखों भाग रहे हैं और घर से निकलते ही बाजार है। आज बाजार में दो रोटी हासिल करना तलवार की धार पर चलना है। उधर परिवार से दुखी, इधर समाज से दुखी। क्या करें ?

●मानव योनि भी अन्य योनियों की ही तरह पीढियों के बीच रिश्तों के जरिये अपनी निरन्तरता को बनाये रही है। समुदाय रूपी समाज रचनाओं में आमतौर पर पीढियों के अनुसार सम्बन्ध होते थे – सम्बोधनों में पीढी की झलक हाल तक दिखती है।

●समुदाय रूपी समाज रचनाओं के टूटने ने मानव योनि के सम्मुख विकट- विकराल समस्यायें उत्पन्न की हैं। ऊँच- नीच, दमन- शोषण वाली समाज व्यवस्थाओं ने इन्सानों के तन और मन पर बहुत ही बुरे- बुरे प्रभाव डाले हैं।

– जन्म के बाद मृत्यु निश्चित है। यह स्वाभाविक है। जन्म पर आनन्द और मृत्यु पर दुख प्राणियों में स्वाभाविक क्रियायें हैं। लेकिन ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में, बँटे हुये समाज में मृत्यु की पीड़ा संकेन्द्रित हो कर असहनीय बन जाती है। ***मृत्यु जो कि स्वाभाविक है वह अस्वीकार्य हो जाती है।*** *अमर होने का जुनून उत्पन्न होता है।*

– समुदाय की टूटन के संग उभरी ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में पुरुष केन्द्रीय भूमिका में पहुँचा। और, पुरुष का "मैं" सर्वग्रासी बना।

– मृत्यु को अस्वीकार्य करती आत्मा- पुनर्जन्म वाली धारणायें एक तरफ और मैं, मेरा रक्त, मेरा वंश, मेरी प्रतिछाया, मेरा नाम जिन्दा रहे के लिये पुरुष- केन्द्रित परिवार उभरे। स्त्री बिना सन्तान सम्भव नहीं इसलिये पुरुष की "मेरी स्त्री" – पत्नी/ पत्नियों के लिये उभरे विवाह संस्कार।

– नाथ/नाथना पशुओं पर नियन्त्रण स्थापित करना था। पति का प्रतीक बनी नाथ – स्त्री का आभूषण करार दी गई नाथ- नथनी। परिवार का बनना स्त्री पर पुरुष के प्रभुत्व का संस्थागत रूप धारण करना था। बच्चों की नाथ माता- पिता दोनों बने और इनके बिना बच्चे अनाथ कहे गये।

– स्त्री और पुरुष के बीच यौन सम्बन्धों के लिये वैध- अवैध की दीवार विवाह संस्कार ने खींची। अवैध सम्बन्धों को भोगना जारी रखा पुरुषों ने और पीड़ा हिस्से आई स्त्रियों व अवैध सन्तानों के। स्त्री पर पाबन्दियाँ, नारी की चौकसी ... जननी परिवर्तित क्लेश जननी में।

●कथित "रक्त- सम्बन्ध" परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग है लेकिन लड़की विवाह के साथ अन्य परिवार की। और, सगे भाई भी अलग दीया, अलग चूल्हे के साथ अलग- अलग परिवार के। पुरुष ने स्त्री को ले कर परिवार के रूप में एक आर्थिक इकाई का गठन किया जो यौन इच्छाओं की पूर्ति के संग सन्तान का जरिया बना। श्राद्ध के वास्ते, "बुढापे की लाठी" के तौर पर पुत्र की उत्कट अभिलाषा।

●यथास्थिति को बनाये रखने, ऊँच- नीच की सीढी पर ऊपर चढने के लिये पूरे परिवार को एक यूनिट के तौर पर काम करना पड़ता है। ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं को परिवार प्राथमिक स्तर पर कन्धा प्रदान करता है। यह इन व्यवस्थाओं की स्थाई सैन्य टुकड़ी के तौर

सन्तानों के संग "बुढापे की लाठी" वाले दुकानदारी के रिश्ते तो पीड़ादायक थे ही, इधर बच्चों के मण्डी में भाव बढाने के लिये बचपने को डसने- निगलने की परिणति युवाओं और अधेड़ों/वृद्धों में सम्बन्ध- विच्छेद में हो रही है।

आचार- विचार में मण्डी के बढते दबदबे के संग अपने को इक्कीस और दूसरे को उन्नीस दिखाने की बढती प्रवृति परिवार में चलती राजनीति को बढा रही है। आज मण्डी की प्राथमिक इकाई बने परिवार में एक- दूसरे के प्रति अनन्त अनादरपूर्ण व्यवहार पनप रहा है जो बारम्बार अपमानजनक बन रोने- धोने की गर्त से हो कर पुनः अनादर के स्तर पर लौट आता है। बच्चे की, बचपन की इच्छाओं- प्रवृतियों की अवहेलना- अनादर को "प्यार" कहा जाता है।

कथित "रक्त- सम्बन्ध" में भी माँ की, स्त्री की प्रमुख, बल्कि सम्पूर्ण- सी भूमिका है परन्तु मान्यता बाप को, पुरुष को। "एक लड़की तो होनी ही चाहिये अन्यथा कोख साफ नहीं होती", और शापी इहलोक से वरदानी परलोक में विचरण वास्ते "कन्यादान महादान" ने पुरुष- पुत्र के प्रभामण्डल में पुत्री के लिये कुछ स्थान रखा। लड़की को पैदा होते ही मार डालने की प्रथा भी रही है परन्तु आधुनिक यन्त्रों से गर्भ में भ्रूण- जाँच कर लड़की होने पर भ्रूण- रूप में हत्या आधुनिक है। **(बाकी पेज चार पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

- खतों से - पत्रों से -

✱संवेदनाशून्य राजनय और लकीर के फकीर समाज को आईना दिखाने की जरूरत है जो केवल सच को बेपर्दा करने से ही संभव है।

आवाज़ कहाँ तक पहुँचेगी
ये सोचना तुम्हारा काम नहीं
सुनने वाले भी मिल जायेंगे
पूरी ताकत से आवाज़ लगाओ तो सही।

—इन्दिरा, कोराडी

✱.... प्रकृति से वरदान स्वरूप सूर्य का प्रकाश, गर्मी, हवा, पानी, यह शरीर और रहने को समुद्र, जमीन, पेड़-पौधे और प्राकृतिक संसाधन एवं भोजन आदि सभी कुछ 84 लाख योनियों को समान रूप में सम्मिलित भागीदारी, परस्पर निर्भरता और सह-अस्तित्व के आधार पर मिला हुआ है।....

आर्थिक विषमता ही अपराध, आतंक की जड़ है। व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति किये बिना, समाज के पास अपराधी को दण्ड देने का कोई नैतिक आधार नहीं है।

1. व्यक्ति या प्राणी अपनी इच्छा से पैदा नहीं होता। 2. जो भी प्राणी पैदा होता है, वह भौतिक है और जीने के लिये भौतिक आधार चाहिये। 3. कोई भी प्राणी, पैदाइश के साथ भौतिक आधार न तो साथ ले कर आता है और न ही मृत्यु के बाद भौतिक आधार साथ ले कर जा सकता है। 4. प्रकृति द्वारा प्राणी पैदा करने से पहले, उसको जीवित बनाये रखने के लिये समानुपातिक नैतिक-भौतिक आधार प्रकृति द्वारा बनाये गये हैं।....

जो भी निर्माण या विकास हो रहा है, वह प्रकृति द्वारा या प्राकृतिक सहयोग आधारित सम्पूर्ण समाज द्वारा सम्मिलित भागीदारी, परस्पर निर्भरता और सह-अस्तित्व के आधार पर हो रहा है। अतः निर्माण द्वारा सम्पूर्ण प्राणियों को सामुहिक रूप से आवश्यकता के समानुपातिक रूप से लाभान्वित होना चाहिये।....

पूरी प्रकृति में आनुवांशिक (जेनेटिक) उत्तराधिकार के शाश्वत नियम के अलावा भौतिक या सांस्कृतिक उत्तराधिकार का कोई नियम नहीं है।

जो भी भौतिक, सांस्कृतिक या शैक्षिक सम्पदा या प्रतिभायें हम अर्जित करते हैं, वह भौतिक शरीर के साथ ही स्वतः विसर्जित हो जाती हैं।

प्रकृति के शाश्वत नियमों के विपरीत, मानव समाज में उत्तराधिकार के नियम प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध हैं और प्रकृति एवं मानव समाज की व्यवस्था में अधिकारों व सत्ता के दुरुपयोग के रूप में प्रतिकूल प्रभाव एवं असंतुलन पैदा करते हैं।... 5000 वर्षों के व्यवस्थित प्रयासों और उत्तराधिकार के नियमों के वैधानिक स्वरूप के कारण आज धनार्जन एवं सम्पदा-संग्रह "श्रेष्ठता एवं योग्यता" का स्थापित मानदण्ड मान लिया गया है।

.... मानव, व्यक्ति या प्राणी प्यार करने के लिये हैं और चीजें उपयोग करने के लिये। दिक्कत तब होती है जब हम मानव, व्यक्ति या प्राणी का उपयोग करने लगते हैं और वस्तुओं से प्यार।

.... लोकशक्ति (जनता की शक्ति) का प्रदर्शन नेताओं को जिताने, सत्ता दिलाने, धर्माचार्यों की लोकेषणाओं की पूर्ति, कुम्भ, अर्द्ध कुम्भ में उनका सम्मान, उनके जुलूस के रूप में तो देखा जाता रहा है, परन्तु अभी तक लोकशक्ति का निषेधात्मक या विधेयात्मक स्वरूप प्रकट नहीं हो सका है अथवा अभी जनता ने रौद्र-रूप धारण नहीं किया है।...

जनता का निषेधात्मक स्वरूप प्रकट न हो सके और जनता को अपनी निषेधात्मक शक्ति का भान ही न हो सके, इसके लिये 5000 वर्षों से बड़ी व्यवस्थित कोशिश व षड्यंत्र किये जाते रहे हैं। जनता का अत्याचार एवं अपराध के प्रति विरोध और विद्रोह का शमन करने हेतु कुछ संस्थाओं या धर्माचार्यों ने व्यक्ति परिष्कार, सहिष्णुता, आचरण, सच्चरित्रता, सदाचार आदि के ऐसे-ऐसे मानदण्ड सिखाये कि .... परन्तु अब इस देश के युवाओं ने अंगड़ाई ली है।

हमारे धर्मतंत्र और धर्माचार्यों ने अपराधियों एवं राजनेताओं के साथ सांठ-गांठ करके....

जिस देश में 40 लाख वेश्यावृत्ति, 2 करोड़ भीख माँगने, 10 करोड़ बाल-मजदूरी या बंधुआ मजदूरी, 20 करोड़ युवा बेरोजगारी और 50 करोड़ झूठ बोलने, चोरी करने और ईमान बेचने को अभिशप्त हों, ऐसे देश में राष्ट्रभाषा, धर्म, चरित्र-सुधार, नैतिकता, विकास और योजनाओं की बातें करना या तो धूर्तता मानी जायेगी या नैतिक अपराध।

—प्रमोद कुमार, ऋषिकेश

✱ *मैंने एक मजदूर के घर में जन्म लिया है*
मैंने इस जीवन को पा कर कैसे जिया है
मैंने फटी सी जिन्दगी को कैसे सिया है
वास्तव में क्या लिया है और क्या दिया है
मुझ से भूख ने बड़ा मँहगा सौदा किया है।
मैं आश्वासन के पलने में पाला गया हूँ
मैं अधिकार के द्वार से खाली टाला गया हूँ
मैं तिरस्कार की नजरों में ढाला गया हूँ
मैं शोषण की भट्टी में उबाला गया हूँ
मुझे मजदूर के बदले मजबूर किया है
मुझ से भूख ने बड़ा मँहगा सौदा किया है।
मेरे ही नाम पर होते प्रस्ताव अभिवादन हैं
मेरे ही नाम पर संस्थाओं के उद्घाटन हैं
मेरे ही नाम पर बहुत जमता भाषण है
मेरे ही नाम पर चोरों को मिलता राशन है
मेरे ही नाम ने मुझ को कंगाल किया है
मुझ से भूख ने बड़ा मँहगा सौदा किया है।
मेरे आस पास खड़े ये हितैषी अनेक हैं
इन सब की हुकुमत की अलग टेक है
कोई जोर से कहता हम सब एक हैं
कोई धीरे से कहता दो लाख एक है
जीते जी दिया तो बस जहर ही दिया है
मुझ से भूख ने बड़ा मँहगा सौदा किया है।
बड़े मोहरत से मेरे हमदम इन्सान आये हैं
चिकनी चुपड़ी तकरीर भरा पकवान लाये हैं
मेरे बोझ को देने कन्धा कई भगवान आये हैं
या मेरी लाश के सौदागर शैतान आये हैं
भरे बाजार में मेरे मुर्दे का मजाक किया है
मुझ से भूख ने बड़ा मँहगा सौदा किया है।..

—जगन्नाथ विश्व, नागदा

✱....आने वाले लोक सभा चुनाव में हम लोगों ने लगभग एक हजार उम्मीदवारों के वैध नामांकन पत्रों को मुजफ्फरनगर निर्वाचन क्षेत्र से भरवाने की योजना बनाई है।....

.... महान जन नेता चक्की के निचले पाट तथा उससे जुड़ी किल्ली को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। स्वतन्त्र भारत के राजनेता इस चक्की को चला रहे हैं। भारतवासी ... इस चक्की में पीसे जा रहे हैं।....

... शासन तन्त्र की संवैधानिक संरचना तथा उसके निर्माण के लिये अपनाई गई निर्वाचन पद्धति... की तीन मुख्य विशेषतायें हैं :

(1) शासन तन्त्र की केन्द्रित संरचना, (2) लोक सभा के निर्वाचन क्षेत्रों का औसतन आकार दस लाख मतदाताओं का होना, तथा (3) उम्मीदवार के रूप में खड़े होने के लिये वैध नामांकन पत्र को प्रस्तुत करने की अनिवार्यता। शासन तन्त्र की संवैधानिक संरचना तथा उसके निर्माण के लिये अपनाई गई निर्वाचन पद्धति की इन विशेषताओं के कारण उम्मीदवार के स्तर तक की राजनीतिक समानता संभव ही नहीं है। इस प्रकार शासन तन्त्र की संवैधानिक संरचना तथा उसके निर्माण के लिये अपनाई गई निर्वाचन पद्धति के होते हुये न तो मनुवादी वर्ण व्यवस्था से छुटकारा मिल सकता है और न ही सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक असमानता की समस्या से।

.... लोक सभा को गठित करने के लिये होने वाले चुनाव में हरिद्वार निर्वाचन क्षेत्र से दो हजार से अधिक उम्मीदवारों के वैध नामांकन पत्र ... दो हजार से अधिक उम्मीदवारों के कारण हरिद्वार निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव सम्पन्न कराना सम्भव ही नहीं होगा। ऐसा होने पर शासन तन्त्र की संवैधानिक संरचना तथा उसके निर्माण के लिये अपनाई गई निर्वाचन पद्धति की षड्यन्त्रकारी भूमिका को समझना तथा समझाना आसान हो जायेगा।

— जगपाल सिंह, मेरठ

✱ गणों के तंत्र में
इंसान पर तंत्र है
जिसने नहीं उठाई आवाज
कायर है।

—रितेन्द्र, जयपुर

✱ हँस रहे पूछो वजह भी —
अभी फारिग हुये रो कर।

—गफूर 'स्नेही', उज्जैन

सामान्य है यह सब

सुरभी इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 318 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 80-90 कैजुअल वरकर हैं और कम्पनी हमें 1200-1300 रुपये महीना तनखा देती है। हमें जबरन ओवर टाइम काम के लिये रोका जाता है और ओवर टाइम का भुगतान जो तनखा लगाई है उसके सिंगल रेट से। हमें ई.एस.आई कार्ड नहीं दिये हैं, प्रोविडेन्ट फण्ड भी हमारा नहीं है। दस दिसम्बर को श्रम निरीक्षक ने फैक्ट्री पर छापा मारा तब कम्पनी ने सब कैजुअल वरकरों को फैक्ट्री के बाहर निकाल दिया और मात्र 50 परमानेन्ट मजदूर फैक्ट्री में रहे। रविवार, 14 दिसम्बर को साप्ताहिक छुट्टी के दिन 10 दिसम्बर के बदले में कम्पनी ने फैक्ट्री में हम कैजुअलों से काम करवाया।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जनवरी 03 से उत्पादन कार्य चल रहा है हालाँकि निर्माण कार्य भी बड़े पैमाने पर जारी है। रंगाई, बुनाई, सिलाई विभागों में 1200 के करीब मजदूर काम करते हैं और फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। जनवरी-फरवरी-मार्च 03 के तीन महीनों के ओवर टाइम काम के पैसे कम्पनी ने अभी तक नहीं दिये हैं और इधर के ओवर टाइम का भुगतान भी दो महीने में जा कर करती है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तो हैं ही, घण्टों में भी गड़बड़ी करते हैं। कारीगरों की 2500 और हैल्परों की 1700-1800 रुपये महीना तनखा है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। दिसम्बर 03 की तनखा हमें आज 14 जनवरी तक नहीं दी है। फैक्ट्री में काम का बोझ बहुत ज्यादा है। अफसर गालियाँ देते हैं और रिश्वत भी लेते हैं।"

क्लच आटो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कुछ मजदूरों को दिसम्बर की तनखा 15 जनवरी को दी गई और बाकी को आज 20 जनवरी तक नहीं दी है।"

एस्कोर्ट्स आटोमोटिव्ज वरकर : "'काम नहीं है' कहती कम्पनी ने तालाबन्दी और फिर यूनियन से समझौता कर 96 परमानेन्ट मजदूरों को एस्कोर्ट्स लिमिटेड के प्लान्टों में ट्रान्सफर कर दिया और.... और 200 कैजुअल वरकर भर्ती कर लिये। एक मैनेजर ने 14 जनवरी को एक कैजुअल वरकर से दुर्व्यवहार किया। इस पर वरकर ने पलट कर मैनेजर के थप्पड़ मारा। कम्पनी ने फैक्ट्री में पुलिस बुला ली। सब कैजुअल वरकर 15 जनवरी को सुबह 8 बजे की शिफ्ट में समय से फैक्ट्री में पहुँच गये लेकिन 8 बजे काम शुरू करने की बजाय विभागों के बाहर खड़े रहे और 9 बजे डिपार्टमेन्टों में गये।"

ओरफिक डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग मजदूर : "प्लॉट 220-221 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। बारह घण्टे ड्युटी के बदले 70-80-90 रुपये दिहाड़ी है पर देते महीने के हिसाब से हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। वेतन 25-28 तारीख को जा कर देते हैं।"

शशि सर्विसिंग वरकर : "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में **ओरियेन्ट पँखों** के पुर्जे बनते हैं और यहाँ हैल्परों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। सप्ताह के सातों दिन 12 घण्टे रोज ड्युटी करनी पड़ती है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। नौकरी छोड़ देने पर कार्य किये दिनों के पैसे नहीं देते, चक्कर कटवाते रहते हैं।"

के.के. कोहली ब्रॉदर्स मजदूर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 40-50 परमानेन्ट मजदूर और कई ठेकेदारों के जरिये रखे गये 250-300 वरकर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रोज 12 घण्टे काम के बदले महीने में 2200 रुपये देते हैं और कुछ की ही ई.एस.आई. तथा पी.एफ. हैं। कोप्स ठेकेदार के एक मजदूर का हाथ मशीन में कुचला गया तो उसे ई.एस.आई. अस्पताल ले गये। लेकिन इधर रात 8 से सुबह 8 बजे की शिफ्ट में एक मजदूर के सिर में बहुत गम्भीर चोटें आई — उसकी ई.एस.आई. नहीं थी, 15 दिन से एस्कोर्ट्स अस्पताल में भर्ती है, दिल्ली अपोलो में भी उसे ले गये थे। परमानेन्ट मजदूरों की आजकल 8 घण्टे की ड्युटी है और इधर एक दिन कम्पनी ने 4 परमानेन्टों को ओवर टाइम पर रुकने को कहा तो उन्होंने भोजन के लिये पैसे माँगे। कम्पनी ने भोजन के लिये पैसे देने से इनकार कर दिया। इस पर मजदूरों ने मशीनें बन्द की और घर चले गये। कम्पनी ने उन 4 का और एक कैजुअल का गेट रोक दिया — आज, 12 जनवरी को फैसले की सम्भावना है।"

किरण इंजिनियरिंग वरकर : "सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री के गेट पर नाम तक नहीं दर्शाया है। यहाँ 30 लोग काम करते हैं जिनमें 2 ही परमानेन्ट हैं। हैल्परों को 1500-1600 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। सुबह 8 से चाढे चार की शिफ्ट है पर फिर रात 8-10 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ के मजदूरों को **व्हर्लपूल, जे.सी.बी., बी एम टी** में काम करने भेजते रहते हैं — अपनी साइकिल पर जाओ। एक कप चाय तक 12-14 घण्टे काम करवाने के दौरान कम्पनी नहीं देती। सरकारी अधिकारी कभी झाँकने भी नहीं आते।"

मेल्को प्रिसिजन मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-27ए स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर का वेतन आज 20 जनवरी तक नहीं दिया है। ओवर टाइम काम का भुगतान कम्पनी सिंगल रेट से करती है।"

शिवालिक ग्लोबल वरकर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट है — 8 घण्टे ड्युटी के 60 रुपये और 4 घण्टे ओवर टाइम के 30 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. और पी.एफ. के पैसे 1700 रुपये तनखा में से काटते हैं — ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छोटे-बड़े अफसर गालियाँ बहुत देते हैं। जबरन 36 घण्टे तक काम पर रोक लेते हैं और गिनती की 6 रोटी देते हैं। दिसम्बर का वेतन 20 जनवरी को दिया।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फस्ट प्लान्ट की शॉकर डिविजन के पावर हाउस में 21 परमानेन्ट मजदूर काम करते थे। कम दिहाड़ी पर मजदूरों से काम करवाने के लिये पावर हाउस को ठेके पर देने की राह पर कम्पनी बढी। इसके लिये एक-एक, दो-दो के स्थानान्तरण कर साल-भर में मैनेजमेन्ट ने पावर हाउस में 7 परमानेन्ट मजदूर ही छोड़े। इधर इन 7 में से 5 को ट्रान्सफर के आदेश दिये तब आखिरकार पावर हाउस मजदूर हरकत में आये। शॉकर डिविजन में 22 जनवरी को बिजली गुल हो गई और 23 जनवरी को भी गुल रही। पौने चार सौ मजदूरों को ड्युटी के दौरान खाली बैठे रहना पड़ा। मजदूरों को आपस में भिड़ाने के लिये कम्पनी ने सब मजदूरों की तनखा काटने का ऐलान किया। शॉकर डिविजन मजदूर शान्त रहे और मैनेजमेन्ट की चाल में नहीं फँसे। यूनियन लीडर ने 24 जनवरी को सुबह साढे नौ बजे बटन दबा कर शॉकर डिविजन की बिजली चालू की। मामला जस का तस है और कम्पनी ने पौने चार सौ मजदूरों की दो दिहाड़ी काटी हैं।"

अल्फा टोयो वरकर, : "प्लॉट 9 एच सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये हम 700 वरकर रखे हैं। हमारे लिये 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हमें 8 घण्टे पर 1400 रुपये महीना तनखा है तथा 12 घण्टे रोज ड्युटी के बदले महीने में 2150 रुपये दिये जाते हैं। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। परमानेन्ट मजदूरों की सुबह की शिफ्ट है, 8 घण्टे की है।"

एस.पी.एल. मजदूर : "प्लॉट 22 सैक्टर-6 में नये सिरे से सिलाई वरकर रखे हैं और अब 8 घण्टे की ड्युटी है लेकिन प्लॉट 21 जहाँ कपड़ों की रंगाई और प्रोसेसिंग होती है वहाँ 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट ही जारी हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

"एस.पी.एल. की प्लॉट 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दिसम्बर की तनखा आज 15 जनवरी तक नहीं दी है।"

टाल्ब्रोस वरकर : "प्लॉट 74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 1550-1650 रुपये महीने की तनखा है। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से — 12 घण्टे काम के कुल 75 रुपये। ई.एस.आई. है लेकिन ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। पी.एफ. नहीं है।"

झलक शोषण की

अखबारों में दिये विज्ञापन के अनुसार 31 दिसम्बर 03 को समाप्त हुई नौमाही में **जिन्दल स्टेनलैस लिमिटेड** ने 27 करोड़ 64 लाख रुपये की "स्टाफ लागत" से 984 करोड़ 53 लाख रुपये के कच्चे माल की खपत कर 1799 करोड़ 5 लाख रुपये का माल तैयार किया। उत्पादन में बिजली एवं ईंधन पर 127 करोड़ 27 लाख रुपये व्यय हुये। स्टोर्स एवं स्पेयर्स में 117 करोड़ 31 लाख रुपये खर्च हुये। और, "अन्य व्यय" नाम से 152 करोड़ 64 लाख रुपये खर्च हुये।

इन 9 माह के दौरान जिन्दल स्टेनलैस लिमिटेड ने सरकार को 152 करोड़ 6 लाख रुपये उत्पाद कर में दिये। कम्पनी ने सरकार के लिये चालू कर के वास्ते 12 करोड़ 65 लाख रुपये और डैफर्ड कर के वास्ते 36 करोड़ 8 लाख रुपये रखे हैं। बैंकों- वित्त संस्थानों को 9 महीने के ब्याज में कम्पनी 24 करोड़ 23 लाख रुपये देगी। उत्पादन के खर्च, सरकार के टैक्सों और ब्याज के बाद जिन्दल स्टेनलैस लिमिटेड का 9 महीने का "शुद्ध लाभ" 132 करोड़ 78 लाख रुपये है।

कम्पनी के अपने आँकड़ों के अनुसार 27 करोड़ 64 लाख रुपये की "स्टाफ लागत" ने 9 महीनों में सरकारों को टैक्सों, बैंकों को ब्याज, कम्पनी को शुद्ध लाभ, तथा अपनी लागत ("स्टाफ लागत") के रूप में 417 करोड़ 30 लाख रुपये पैदा किये। "स्टाफ लागत" का आधा हिस्सा औसतन साहबों के वेतन- भत्तों में खपता है। अतः कह सकते हैं कि 13 करोड़ 82 लाख रुपये के बदले में जिन्दल स्टेनलैस मजदूरों ने 417 करोड़ 30 लाख रुपये नये मूल्य का उत्पादन किया। मजदूरों द्वारा अपनी मेहनत से उत्पन्न नये मूल्य में से मजदूरों को कितना मिला? कम्पनी के आँकड़ों के अनुसार मजदूरों को अपने उत्पादन के साढ़े तीन प्रतिशत से भी कम मिला।

आमतौर पर कम्पनियों की मैनेजमेन्टें दो नम्बर में कुल उत्पादन का 15 प्रतिशत के करीब कट- कमीशन में हड़पती हैं -- उत्पादन व्यय और बिक्री आमदनी, दोनों में यह रकम छिपा दी जाती है। इसे भी गणना में लेने पर मजदूरों को अपने उत्पादन का दो प्रतिशत ही मिलता है। इसीलिये काम के बढते बोझ से दबते जाने के बावजूद मजदूर होना गरीब होना लिये है।

जिन्दल स्टेनलैस लिमिटेड के आँकड़ों को रुपये- पैसों की बजाय घण्टों- मिनटों में देखें तो: एक मजदूर 10 से 16 मिनट में अपने वेतन के बराबर काम कर देती- देता है। आठ घण्टों में पौने आठ घंण्टे, बारह घण्टों में पौने बारह घण्टे हम सरकार- बैंक- कम्पनी के लिये खटते हैं। शोषण की दर आज तीन हजार प्रतिशत के दायरे में है। फैक्ट्री उत्पादन में यहाँ यह स्थिति सामान्य है।■

पीढियों के बीच सम्बन्ध.... (पेज एक का शेष)

पर कार्य करता है। उनके भले के नाम पर बच्चों की दुर्गत करना और फालतू- बोझ के तौर पर बुजुर्गों का अपमान करना परिवार का सामान्य काम है।

अस्थाई फौज : लूटा और दफा हुई। स्थाई फौज : लगातार लूट का सिलसिला।

●ममता, प्रेम, लगाव, होने का अहसास, मनोरंजन, संवेदना, भावना, आदर, सहायता, सहभागिता, आगमन पर प्रसन्नता, बिछुड़ने पर गम .... शिशु- बालक/बालिका- युवा- प्रौढ- वृद्ध के बीच, पीढियों के बीच बहुआयामी रिश्ते होते हैं। समुदाय- व्यापी पीढियों के बीच जो जोड़ थे वे परिवार के खाँचे में सिमटते- सिकुड़ते अब पीढियों के बीच तोड़ में प्रवेश कर गये हैं। दासी- माँ, दाई- माँ, गवर्नेस चन्द स्वामी, सामन्त, मेम स्त्रियों की माँ की भूमिका को सीमित करती थी जबकि बालवाड़ी- क्रेच बड़ी संख्या में नौकरीपेशा महिलाओं की माँ की भूमिका को सीमित करने लगी हैं। स्वामी-सामन्त- साहब तबके के चन्द दादा- दादी, नाना- नानी की भूमिका को बहुरूपिये- गायक- कथाकार- शिक्षक सीमित करते थे जबकि अध्यापकों और विभिन्न माध्यमों से विशेषज्ञों ने व्यापक स्तर पर दादा- दादी, नाना- नानी को खुड्डे लाइन लगा दिया है।

सम्बन्धों का गहरा, दीर्घ, व्यापक होना सुफल, सफल, अर्थपूर्ण जीवन का पैमाना है।

●समुदायों के टूटने, ऊँच- नीच के आगमन के संग समुदाय- व्यापी पीढियों के बीच रिश्ते सिकुड़ कर परिवार में पीढियों के बीच संकरे रिश्ते बने। मण्डी का दबदबा और विस्तार परिवार को और सिकोड़ कर पति- पत्नी- पुत्री/पुत्र में ले आया है। मशीन बनी जिन्दगी पति- पत्नी में प्यार- रोमांस के लिये समय ही नहीं छोड़ रही तथा संग- संग इच्छा- ऊर्जा कम हो रही हैं और यौन इच्छा उत्पन्न करने वाले उद्योगों का आधार बनी हैं। मण्डी की धुरी वाली वर्तमान व्यवस्था का संकट, इसका चरमराना उच्च स्तर के विकसित क्षेत्रों में अकेली स्त्री द्वारा बच्चे के पालन तक परिवार को सिकोड़ लाया है। अकेले व्यक्ति को परिवार नहीं कहते, परिवार की परिभाषा अनुसार एक अकेला- अकेली परिवार का गठन नहीं करती- करता और... और पृथ्वी पर उच्च स्तर के विकसित क्षेत्रों में अकेले- अकेले रहते लोगों की तादाद बढती जा रही है।

वृद्धाश्रमों का बनना- बढना और बच्चों के लिये चाहत का सिमटना- मरना मानव योनि में पीढियों के बीच सम्बन्धों में भारी गड़बड़झाले के प्रतिबिम्ब हैं। जन्म के बाद मृत्यु की स्वाभाविक परिणति का अस्वीकार्य सामाजिक मनोरोगों का जनक बना है। यह विकट- विकराल स्थिति नये समुदाय आधारित नई समाज रचना के लिये मुखर पुकार भी है।■

बन्दी वाणी (7)

[अमरीका सरकार ने "अपने" बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अनुवाद की और सन्दर्भों की दिक्कतों के कारण यहाँ हम अपने शब्दों में अमरीका सरकार के कैदखानों में बन्द लोगों की वाणी को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।]

कबाड़ा हुआ है समाज जिसमें हम रहते हैं। समाज को कुरेद कर, खोद कर गहराई से देखने की जरूरत है।

हमारा समाज एकता की, समरसता की चाहत के दावे करता है लेकिन अमल में रंगभेद, आर्थिक ऊँच- नीच, और चालू फिकरेबाजी हावी है। काले को देखते ही मुर्गा भक्षी, शहरी, अपराधी/गिरोह का सदस्य करार देना। स्पेनी भाषी को दाल- भात खाइया, मादक पदार्थ सरकाता- सरकाती, कार चोर करार देना। एशियाई को बिल्ली- कुत्ता खावा, कराटे लड़ाकू, खराब ड्राइवर करार देना। उच्च वर्ग ऊँचे अटका है, मध्यम वर्ग सब से अच्छा है, और हमारी दुनियाँ के इस कदर कबाड़ा होने का कारण निम्न वर्ग को ठहराना। इस तस्वीर में गड़बड़झाला नहीं है क्या?

अपराध होने पर हमारा समाज न्याय चाहता है, यह अपराधी को सजा देना चाहता है। लेकिन हमारे समाज में थोड़ा गहरा झाँकने पर यह समाज ही अपराधी भी नजर आता है। छोटे- बड़े अपराधियों से हमारा समाज बना है। आज एक भी व्यक्ति ऐसा- ऐसी नहीं है जिसने कोई अपराध न किया हो।

अपराध, अपराधी, पीड़ित, सजा, न्याय, समाज शब्दों के शब्दकोष अर्थ देखते हैं तो विगत में अथवा वर्तमान में, छोटा अथवा बड़ा, जानबूझ कर अथवा अनजाने में प्रत्येक ने अपराध किये हैं, अपराध कर रहा- रही है। यह तो पुलिस के हाथ में है कि सब्जी खरीदते समय बिना खरीदे मटर खाने पर चोरी तथा अन्य गम्भीर आरोप आप पर लगा दे। किसी की खिड़की का शीशा टूटना, धक्का- मुक्की होना, लालबत्ती पार करना, (अमरीका में जो सामान्य है) हथियार पास होना, रंग भेद का- पूर्वाग्रह का प्रदर्शन आदि- आदि की स्थितियाँ व्यापक हैं और उन पर पुलिस तथा न्याय विभाग क्या- क्या संगीन अपराध की धारायें लगा दें यह उनकी मर्जी पर है।

समाज न्याय और सजा चाहता है लेकिन सजा की परिणति आमतौर पर अन्यायपूर्ण होती है। अपराधी वृत्ति वाला हमारा समाज अपराध करता है और पीड़ितों का उत्पीड़न कर स्वयं को उत्पीड़ित करार दे कर न्याय की माँग करता है। न्याय है सजा। सजा है कैद। अन्याय है बन्दी बना कर रखना। हमारा समाज टेढा है, इतना टेढा है कि हम सम्मुख रखे तथ्यों को देख नहीं पाते।

-- ली, अमरीका सरकार के कारागार में बन्दी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।